कुतिया

मृणाल पाण्डे

उसकी बड़ी-बड़ी काजर-अंजी आंखों ने अभी डरना या जबरन लजाना नहीं सीखा था। एक स्तब्ध कौतूहल से वे कैमरे के लेंस को बिट-बिट ताकती थीं। उसकी गोद में सर धर बाल-वधू का दूल्हाः देसी कुत्ता-बुलेट गले में फूल हार डाले हुए सभी दूल्हों की तरह उनींदा-उदासीन दिखता पसरा हुआ था। खाट पर बदस्तूर चित्त लेटे-लेटे अखबार पढ़ रही थी। अचानक नज़र उस चित्र पर अटकी तो पट से मैं उठ बैठी। लाल झीने घूंघट से अधढंका, बच्ची का ताज़ा तोड़े बैंगन सा, वह सुन्दर आबनूसी चेहरा हमें निसंकोच घूर रहा था।

लड़की के बाप ने दस-पन्द्रह हज़ार रुपए खर्च कर पूरे समारोह से बेटी को कुत्ते से ब्याहने का ज़ोरदार अनुष्ठान किया था। सिंदूर-दान, शंख-लोहे की चूड़ी पहनाना, उलूध्वनि, मंत्रोच्चार सब हुआ। बाद में ज़ोरदार बहू भात परसा गया, जिसमें मछली, पुलाव, चिकन कोरमा, मछली के मूंड के साथ पकी दाल, रसगुल्ला, पान सब था। बुलेट के पक्ष के सब लोगों ने खूब दबाकर खाया। और फिर कल तक की अंजु कर्मकार, पितृकुल का गोत्र छोड़कर सारमेय गोत्र की कुतिया बन गई थी।

इसी से बच्ची का अनिष्ट कटेगा। गांव वालों ने पत्रकारों से कहा। जब से जनमी थी तब से बाबा रे, कष्ट ही कष्ट। बार-बार गिरना, चोट खाना! कभी दांत टूटता, कभी हाथ-गोड़। दो बार तो डूबते-डूबते बची थी छोकरी! निष्कर्ष निकाला गया कि हो न हो छोकरी के ग्रह टेढ़े हैं। लम्बी, कुटिल याददाश्त वाली बुढ़ियों को याद आने लगा, कि उसका पहला दांत भी, आहा, आठवें महीने में ही निकल आया था! कुदृष्टि लेकर जनमी है अभागी, घोर कुदृष्टि! खानदान में दो बार पहले भी ऐसी ही लड़कियां जनमी थीं। उन दोनों को भी कुत्ते से ब्याहा गया, जब जाकर कुल का ग्रहदोष कटा था।

सो अंजु के लिए कोई अच्छा सा कुत्ता तलाशा जाने लगा। एक परिचित के घर बुलेट पल रहा था। वहां बात चलाई गई, और जल्द ही तय हो गई। बारात चढ़ी ब्याह हुआ, और उलू-ध्वनि के बीच बुरे ग्रहों से बचाने के लिए एक बच्ची को कुतिया बना दिया गया।

मैं मुंह बाए यह पढ़ रही थी, कि कंधे पर गदा की तरह सींक और फूल की दो-दो झाड़ू रखे शुभदा ने मेरे कमरे में प्रवेश किया!

'उठो मां उठो! जल्दी करो मुझे अभी चार घर और जाना है,' शुभदा ने झाड़ू की पीठ को फर्श पर ठोंकते हुए मुझसे साधिकार कहा। हर वक्त हड़बड़ी में रहने वाली शुभदा पास की ही एक झुग्गी-बस्ती से मुहल्ले में काम करने को आती है। चारेक बरस हुए, उसका मालिक हारान अचानक उस चार बच्चों की मां को अपने भाग्य पर छोड़कर, किसी सियार की जाई जादूगरनी के प्रेम पाश में बंध-बंधाया सीमापुरी साइड की एक झुग्गी में रहने चल दिया था। तब तक शुभदा दो घर पकड़े हुए थी। अब उसने पांच पकड़ लिए हैं। पांचवा, यानी मेरा, उसे तब कुछ अनिच्छा से ही पकड़ना पड़ा था, जब मेरी पुरानी बाई, शुभदा की बेटी अन्नदा भी बाप की

ही तरह अचानक अपने बूढ़े पति को छोड़कर किसी पोण्टू की प्रेम-डोर में खिंची-खिंचाई किसी जमुनापारी बस्ती में जा बसी। जाते-जाते उसने अपनी मां से कहा था, कि उसकी एवज में वह टी.वी. वाली मैडम के घर भी सुबह-सुबह चार पोंछा मार जाया करे; उसे बड़ी दिक्कत है।

मैं अन्नदा की कृतज्ञ हूं। मेरे जैसे इकलखोरे लोगों के काम का अक्सर बड़ा बीहड़ टाइमटेबल होता है। सुबह-सुबह जितना घर का काम हो गया, सो हो गया। उसके बाद तालाबंदी के अलावा चारा नहीं। शुभदा ने कहा वह ठीक सात बजे सुबह आ जाएगी, मंज़ूर है? हां मेरी मां, मंज़ूर है। सो बस पकड़कर वह अलस्सुबह मेरे घर आ जाती है। मैं चाय बनाती हूं, अपने लिए भी और उसके लिए भी। फिर मैं जहां कहीं होऊं, वहां से मुझे बाहर हंकाल कर वायुवेग से वह अपना काम शुरू, कर देती है।

'पैर उठाओ मां, शुभदा मुझसे कहती है।' पर इससे पहले कि मैं तखत पर पंखे से फरफराते अखबार को दबोचे सेही की तरह गुडी मुडी गठरी बनूं, मैं उसे बुलाकर फोटो दिखाती हूं।

'पहले ये देखो, प्यारी है न बच्ची।'

'बच्ची है, प्यारी तो लगेगी ही। पर रंग की काली है।'

'इसके बाप ने इसे एक कुत्ते से ब्याह दिया है।'

'बाप है, लड़की को किसी से ब्याह दे, किसी का क्या?'

'अरे कानूनन अठारह से कम, लड़की का ब्याह करना जुर्म है।'

'मनुष्य से ना! कुत्ते से तो नहीं।'

'फिर भी ब्याह तो दिया ही ना? जेल होगी अब उसे, देखना।'

'अहा, कुत्ते से ब्याहा तो क्या बुरा किया?'

'खराब ग्रह होंगे छोकरी के। हमारे गांव में भी एक को ऐसे ही पीपल के पेड़ से ब्याह दिया गया था, एक को तुलसी के पौधे के संग! उनका नसीब!'

'पर किसी ग्रह दोष वाले लड़के को भी कभी ऐसे ब्याहा गया ये तो नहीं सुना।'

'ऐसे लड़के भी होते हैं। पर उनको तो मां पांच पैसे में किसी गरीब को बेच देंगे, फिर तीन या छः पैसे में खरीद लेंगे। ऐसा होता है। खरीद के बाद नाम रख देंगे पांचू या तिनकौड़ी या छकौड़ी! कोई-कोई उनको घूरे पर रख के भीख में उठा लेते हैं। वो हो गया भिखारी। किस्सा खत्म। पर लड़की का ऐसा है मां कि उसका तो गोत्र भी बदलना हुआ? नहीं, तो गलग्रह बन के छोकरी खानदान की छाती पर ही पड़ी रहेगी। पाप लगेगा बाप को, घोर पाप!'

'पर कुत्ता ही क्यों छांटा ब्याहने को?'

'क्यों नहीं? क्या बुरा है कुत्ते में? इंसान की तरह शराब पीके तो नहीं आएगा? बहू से मारपीट तो नहीं करेगा? उसके बाप-भाई से हाथघड़ी या साइकिल की मांग करके घर तो सर पर नहीं उठाएगा? देखो कैसा पड़ा हुआ है बेचारा। चुपचाप उसकी गोद में सर देके? बहू दो रोटी डाल देगी तो उसका हाथ ही तो चाटेगा, दांत नहीं दिखाएगा।'

'किसी दिन अपनी किसी जात वाली के पीछे चल दिया तो?'

'अरे ये क्या औरत का जाया नहीं करता? कम से कम ये लौट के फिर उसी के पास जाएगा, जो उसे रोटी देती है! तीन बच्चे गोद में और एक उसके पेट में छोड़ के किसी डायन के साथ हमेशा के लिए गायब नहीं हो जाएगा। अब देखना मां, बच्ची की हारी-बीमारी सब जाती रहेगी! खोटे ग्रह अपने आप भूल जाएंगे उसको! होता है, ऐसा होता है।'

'हारी-बीमारी है, तो डाक्टर के पास जाने से जाएगी। ये कुत्ता-बिल्ली से गठजोड़ कराने से क्या?'

'डाक्टर? सरकारी डाक्टर क्या जाने बुरी किस्मत क्या चीज होती है? गरीबनी के मन में क्या पक रहा है, उसे जानने का वक्त भी होता है क्या? बिना सर उठाए, बिना आला लगाए छः गोली का पर्चा लिख दिया, एकाध सुई लगा दिया! हुआ। तीन दिन बाद फिर जाकर, हाल वैसा ही है कहो तो कहता है, अच्छा खाना खाओ, आराम करो, खुश रहो। सिर्फ़ दवा से पूरा फायदा नहीं होगा। हूं ह्! आराम! शुभदा जाला ऐसे झाड़ती है जैसे दीवारों को पीट रही हो। अरे आराम ही हमारी किस्मत में होता तो हम जनम भर कीड़ों की उस बस्ती में पड़े रहते?'

'लिखा है पुलिस मामले की जांच कर रही है।'

'हां! पुलिस! उसे क्या?'

'अरे, चार बरस की बेटी का ब्याह कर दिया। गैरकानूनी काम किया, तो जांच नहीं होगी क्या,'

'कुत्ते से भी मत ब्याहो, क्या ऐसा लिखा है उस कानून में?'

'नहीं। लेकिन'

'कौन गवाही देगा मां-बाप के ख़िलाफ़? क्या कुत्ता अदालत में जा के कहेगा कि हां शादी हुई है?'

शुभदा, हसंते-हंसते झाड़ू दरवाज़े से अगले कमरे में फेंक कर फिनायल की बालटी में पोंछा डुबोती है!

'हंसने की बात नहीं शुभदा' मैं कहती हूं। पर उसके हंसी से फुद-फुद फुदकते आनंदी चेहरे की छूत मुझे भी लग रही है। अनचाहते भी मैं हंस रही हूं।

'अरी मेरी मां। कम से कम ये कुतिया का जाया रात-बिरात शराब पीके तो घर नहीं लौटेगा? बहू को कच्चा-पक्का खाना परसने पर लात-घूंसों से धुनेगा तो नहीं? उसके घरवालों से कभी साइकिल और कभी हाथघड़ी की फरमाइश भी नहीं करेगा। काला कुत्ता ही भला हमारे ऐसे मर्दुओं से, मां।'

'पर बेचारी बच्ची'

'अरे कैसी बेचारी? खुश है। उसे जामा-कपड़ा मिला होगा, मिठाई मिली होगी। बुलेट से खेलने का साथ हो गया। चार बरस की बच्ची को और क्या चाहिए?'

'पर जब बड़ी होगी'

'जब बड़ी होगी तब तक भी दुनिया बदलेगी नहीं उसके लिए- पैर ऊपर करो'- शुभदा पोंछे का विराट अर्द्धचंद्राकार वार करती है! यह कमरा हो गया। उस पर तृप्ति की नज़र डालकर, शुभदा पोंछा बालटी में वापस फेंकती है, और तखत के पास उकड़ूं बैठकर धोती की छोर से गुटके का आधा पैकिट खोलकर ब्रह्मानंद में लीन हो जाती है! फिर पीक गुलगुला कर वह बाहर थूक आती है... 'तुम मानो ना मानो मां, बुरे ग्रह बड़ी खतरनाक चीज होते हैं... इसीलिए तो दुनिया में इतना जादू टोना चलता है... मेरे बगल में है एक टोनही, जानो? पूत-भतार कुछ नहीं, पर खूब ठाठ से रहती है... सब जानते हैं कि वो काला जादू साधती है... पिछले हफ्ते हरामजादी मेरे बच्चों को अपनी गली में खेलने पर रगेदने लगी... सब चुप रहे, ऐसा खौफ है उसका... रात को मेरे छोटे वाले को टणमण बुखार, और दे उलटी पर उलटी... फिर मेरा माथा भी गरम हुआ... अपनी दोस्त को लेके मैं भी गई पटपड़गंज की मदर डेरी वाली एक टोनही के पास... एक बोतल दारू, एक देसी मुर्गा और इक्यावन रुपए! तब का दिन है, आज का दिन है टोनही दिखाई नहीं दी किसी को। और मेरा बच्चा ठीक-ठाक है। अब तुम्हीं बताओ, कौन डाक्टर और पुलिस ऐसे पटापट निबटाता हमारा मामला?'

यूं शुभदा का काम और कथा- वाचन लगभग एक साथ उस बिंदु पर, जहां मालकिन और नौकरानी या मनुष्य और कुत्ते या पुलिस और टोनही या मां और चुड़ैल में फ़र्क़ खत्म हो जाता है।

'निष्फिकर रहो मां,' वह जाते-जाते कहती है। 'कुत्ते से ब्याही वह अभागी लड़की नहीं मरेगी, हां मनुख से ब्याही ज़रूर मर सकती थी।'

मृणाल पाण्डे *हिन्दी साहित्य की वरिष्ठ लेखिका व पत्रकार हैं।*